शांतिवन। पीराणा धर्म से जुड़े सदस्यों को परमात्मा के चल रहे दिव्य कार्यों की विस्तार से जानकारी देने के पश्चात् ग्रुप फोटो में हैं, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु.गीता, ब्र.कु.गंगाधर तथा अन्य।

सम्पूर्णता के लिए तीव्र पुरुषार्थ

प्रथम सप्ताह

स्वमान - मैं ब्रह्मा बाप समान पवित्रता का फरिश्ता हूँ।

पवित्रता ब्राह्मण जीवन का वरदान है। पवित्रता ब्राह्मण जीवन के विशेष जन्म की विशेषता है। पवित्र संकल्प ब्राह्मणों की बुद्धि का भोजन है। पवित्र दृष्टि ब्राह्मणों के आंख की रोशनी है। पवित्र कर्म ब्राह्मण जीवन का विशेष आधार है। पवित्र सम्बन्ध और संपर्क ब्राह्मण जीवन की मर्यादा है। पवित्रता के आधार से ही ब्रह्मा बाबा 'आदि देव' वा 'फर्स्ट प्रिंस' बनें तो फॉलो फादर।

योगाभ्यास - 1. मैं परमपवित्र आत्मा हूँ - सदा इस स्वमान में स्थित हो जाओ तो प्योरिटी की पर्सनैलिटी व अथॉर्टी का अनुभव होगा।

2. आपका वायदा है कि और संग तोड़ एक संग जोड़ेंगे, तुम्हीं से खाऊं, तुम्हीं से बैठूं, मेरा तो एक दूसरा ना कोई। तो इस वायदे पर पूरा अटेंशन रखना अर्थात् प्योरिटी की पर्सनैलिटी को धारण करना।

3. वरदाता बाप को कम्बाइंड रूप में अनुभव करो तो अपवित्रता स्वप्न में भी नहीं आ सकती।

4. तुम्हारा स्वरूप ही पवित्र है, स्वधर्म पवित्र है, स्वदेश पवित्र देश है, स्वराज्य पवित्र राज्य है।

धारणा - सम्पूर्ण पवित्रता

- पवित्रता ब्राह्मण जीवन की महानता है।
- पवित्रता ब्राह्मण जीवन का श्रेष्ठ श्रृंगार है।
- 21 जन्मों की प्रालब्ध बनाने का आधार पवित्रता है।
- आत्मा और परमात्मा के मिलन का आधार पवित्रता है।
- संगमयुग की सर्व प्राप्तियों का आधार पवित्रता है।

चिंतन - सम्पूर्ण पवित्रता से बाबा का क्या अभिप्राय है?
- सम्पूर्ण पवित्रता के मार्ग में कौन-कौनसी चीजें बाधक बनती है?
- सम्पूर्ण पवित्रता के लिए पुरुषार्थ क्या है?
- सम्पूर्ण पवित्रता के लिए बाबा के महावाक्य क्या-क्या हैं?

साधकों प्रति - प्रिय साधको! ब्रह्माकुमार-कुमारी का अर्थ ही है सदा प्योरिटी की पर्सनैलिटी और रॉयल्टी वाले। यही पर्सनैलिटी विश्व को अपनी ओर आकर्षित करेगी। और यही प्योरिटी की रॉयल्टी धर्मराजपुरी में रायल्टी देने से छुड़ायेगी। इसी रॉयल्टी से भविष्य रूयल फैमिली में आयेंगे। इसलिए पवित्रता की धारणा में स्वयं, स्वयं के प्रति कड़ी दृष्टि रखें, स्वयं को चलायें नहीं, अलबेले नहीं बनें क्योंकि धर्मराज इस बात में किसी को छोड़ेंगे नहीं, पूरा हिसाब लेंगे।

दूसरा सप्ताह

स्वमान - मैं ब्रह्मा बाप समान सर्वस्व त्यागी हूँ।

जैसे ब्रह्मा बाबा ने सर्व स्थूल सुख-सुविधाओं के साथ-साथ सूक्ष्म विकारों का एक झटके में त्याग कर दिया... राजाओं जैसे ठाठ-बाट को छोड़कर सादा जीवन अपना लिया... अपने 'मैंपन' और 'मेरेपन' का त्याग कर निमित्त और निर्माण भाव धारण कर लिया... अपने त्याग का कभी वर्णन नहीं किया... त्याग का भी त्याग कर दिया। तो ऐसे फॉलो फादर।

योगाभ्यास - इस सप्ताह ब्रह्मा बाबा समान हम सभी अपने 'मैंपन' और 'मेरेपन' का त्याग करेंगे अर्थात् जब भी 'मैं' शब्द बोलेंगे तो 'मैं आत्मा हूँ' .. शुद्ध, शीतल, शक्तिशाली आत्मा हूँ...सर्व गुणों व शक्तियों की खान हूँ... ये याद करेंगे, साथ ही जब भी 'मैं' शब्द बोलेंगे तो हर बार अपने अलग-अलग स्वमानों को याद करेंगे... जैसे - मैं एक महान् आत्मा हूँ... मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ... मैं आधारमूर्त और उद्धारमूर्त आत्मा हूँ... मैं पूर्वज आत्मा हूँ... मैं पवित्र आत्मा हूँ... आदि..। इसी प्रकार जब भी 'मेरा' शब्द बोलेंगे तो 'मेरा बाबा' याद करेंगे ... मेरा तो एक शिव बाबा दूसरा न कोई... बाबा के साथ सर्व सम्बन्धों का अनुभव करेंगे... मेरा कहते ही बुद्धि तुरंत एक बाबा में चली जाए और उसके प्यार में समा जाए...।

ड्रिल:- बापदादा की आज्ञानुसार हम सारे दिन में बीच-बीच में अशरीरी होने की ड्रिल करेंगे।

धारणा - सर्वस्व त्यागी।

- त्यागवान ही भाग्यवान बनते हैं। जितना त्यागी, उतना सारे कल्प श्रेष्ठ पद का अधिकारी।
- जो त्यागवृत्ति का त्याग करके यहीं कच्चा फल खा लेते हैं, उनका भविष्य पद कम हो जाता है।
- त्यागी ही तपस्वी बन सकते हैं। बिना त्याग के तपस्या संभव नहीं।

स्वचिंतन - सर्वस्व त्यागी किसे कहेंगे? इसका एक शब्दचित्र बनाएं।
- किस-किस चीज का हमें त्याग करना है उसकी एक सूची बनाएं।
- मैंने अब तक किन-किन चीजों का त्याग किया है और किन-किन चीजों का त्याग करना बाकी है?
- मैं क्यों इनका त्याग नहीं कर पा रहा है उसका कारण क्या है? कब तक त्याग करेंगे?
- वर्तमान समय त्याग की आवश्यकता क्यों है? साथ ही त्याग के लिए बापदादा के महावाक्यों को चिंतन-मनन करें।

साधकों प्रति - प्रिय साधकों! त्याग एक बड़ा ही महीन और महत्वपूर्ण विषय है। बाबा के बनने के बाद हम मोटे-मोटे त्याग तो कर लेते हैं लेकिन जहां सूक्ष्म त्याग की बात आती है, वहां हम नम्बरवार हो जाते हैं। बाबा हम सब बच्चों को नम्बरवार नहीं लेकिन नम्बरवन देखना चाहते हैं। इसलिए अब हम सर्वस्व त्यागी बनें। उन सभी सूक्ष्म कमी-कमजोरियों, अवगुणों का त्याग कर दें। जो हमें तीव्र पुरुषार्थी और बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनने नहीं दे रहे हैं। इन कमियों का त्याग हमें कभी न कभी तो करना ही होगा तो क्यों नहीं आज, अभी और इसी वक्त से कर दें...!!

अहमदाबाद, बापूनगर। 'हरिद्वार मेले' का उद्घाटन करते हुए विधायक वल्लभ भाई साथ में हैं ब्र.कु.सरला, ब्र.कु.भारती ।

बठिंडा। नवनिर्वाचित विधायक सरूप चंद सिंगला को गुलदस्ता भेंट करते हुए ब्र.कु.कैलाश साथ में हैं पवन सिंगला, ब्र.कु.शिवानी ।

अलवर। 'गीता ज्ञान दाता शिव या श्रीकृष्ण' विषय पर मूट कोर्ट प्रतियोगिता में मंचासीन हैं डॉ.आर.एस.खोलिया, डॉ.एन.बी.शर्मा, डॉ.बाबूलाल यादव एवं ब्र.कु.अनुभा।

भैरहवा। ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् ग्रुप फोटो में हैं ब्र.कु.शांति, ब्र.कु.सत्या, ब्र.कु.भूपेन्द्र तथा अन्य भाई-बहनें।

बैलहोंगल। दीप प्रज्ज्वलित करते हुए बसवलिंग स्वामी जी रूद्राक्षीमठ, नीलकंठ स्वामी, नागनूड़ स्वामी एवं ब्र.कु.प्रभा।

वारडोली। 'अमृत महोत्सव' पर दीप प्रज्ज्वलित करते हुए टी.डी.ओ.वदर साहेब, भगुभाई पटेल, ब्र.कु.स्वामीनाथन एवं ब्र.कु.मंजुला।